ST. XAVIER'S SCHOOL, PURULIA

CLASS- X SUB : HINDI LIT. DATE : 25.05.2020

सूर के पढ़ (सूरदास)

I. "जसोदा हरि ..... नंद भामिनी पावै।"

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य सागर के पद्य भाग से सूरदास द्वारा रचित सूर के पद से उद्घृत है।

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रीकृष्ण के बाल रूप एंव माता यशोदा द्वारा सुलाने के प्रयास का सजीव वर्णन किया है।

व्याख्या- माता यशोदा श्रीकृष्ण को पालने में हिलाती है, झुलाती है, कभी श्रीकृष्ण के प्रति स्नेह भाव दिखाती है, कभी लोरियाँ गाती हुई उन्हें सुलाने का प्रयास करती है, कभी नींद को कोसती हुई कहती है कि हे नींद तू जल्दी से आती क्यों नहीं है ? जल्दी से आकर मेरे लाल को सुलाती क्यों नहीं है ? तुझे स्वयं कान्हा बुलाता है, तू फिर भी नहीं आती है। श्रीकृष्ण कभी आँखें बंद कर लेते हैं, तो कभी अपने होंठ हिलाते हैं। श्रीकृष्ण को .. देखकर माता यशोदा को लगता है कि वह सो गए हैं। वे स्वंय शांत हो जाती है अन्य सदस्यों को भी इशारे से शांत रहने के लिए कहती है, किन्तु दूसरे ही पल कृष्ण परेशान होने लगते हैं और अगले ही पल उठ जाते हैं। श्रीकृष्ण को जगता हुआ जानकर यशोदा माता पुनः लोरी गाने लगती है। कवि कहते हैं कि श्रीकृष्ण को भिन्न-भिन्न तरीके अपनाकर सुलाने का प्रयत्न करती हुई माता यशोदा को जो सुख प्राप्त हो रहा है, वह सुख ... ऋषि-मुनियों को भी प्राप्त नहीं होता।

II. "खीजत जात ..... तजन न मात"

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रीकृष्ण की बाल क्रीड़ाओ का मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया है।

व्याख्या- श्री कृष्ण माखन खा रहे हैं उन्हें नीदं भी आ रही है. नींद आने के कारण उनकी आँखें लाल हो गई है जिस कारण वो ठीक से खा भी नहीं पा रहें है। इस कारण वे क्रुद्ध हो रहे हैं। वे बार-बार जम्हाई ले रहे हैं। नींद के कारण उनकी भौंहे टेढ़ी हो रही हैं। जब वे घुटनों के बल चलते है, तो उनकी पायलों में लगी घुँघरूओं की आवाज इतनी मधुर प्रतीत होती है, मानो मन को मोह लेने वाली हो। घुटनों के बल चलने के कारण श्री कृष्ण का सारा शरीर धूल से सन जाता है। वे स्वयं ही अपने बाल खींच लेते हैं जिसके कारण उनकी आँखों में

आँसू भर आते हैं। वे कभी अपनी तोतली भाषा में बोलते हैं, तो कभी वे 'तात' कहकर पुकारते हैं। यशोदा को श्री कृष्ण की ये सारी क्रियाएँ बहुत मनमोहक लगती हैं वे श्री कृष्ण की मनको मुग्ध करने वाली दृश्यों को एक क्षण के लिए भी स्वयं से दूर नही करना चाहती है। इसलिए वे श्री कृष्ण को पल भर के लिए भी स्वयं की आँखों से दूर नहीं होने देना चाहती।

III. "मैया मेरी ..... नूतन मंगल गैहों।"

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रीकृष्ण के हठी रूप का चित्रण किया है।

व्याख्या- श्रीकृष्ण आकाश में चमकते हुए चाँद को देखकर उसे खिलौना समझ अपनी माँ यशोदा से उसे लेने की जिद करते हैं। वे कहते हैं कि यदि मुझे वह खिलौना नहीं मिला, तो मैं न तो कुछ खाऊँगा और न ही घौरी गाय का दूध पीऊँगा, न तो मैं अपने बाल बँधवाऊँगा, न मोतियों की माला धारण करुँगा और न ही कुरता पहनूँगा वे कहते हैं कि यदि चंद्रमा उन्हें न मिला, तो वे मिट्टी से भरी धरती पर लेट जाएँगे, माता यशोदा के गोद में नहीं आएँगे। इसके साथ ही माता यशोदा के पुत्र नहीं कहलाएँगे बल्कि नंद बाबा के पुत्र कहलाएँगे। श्रीकृष्ण के हठ को देखकर माता यशोदा श्रीकृष्ण को बहलाने का प्रयास करते हुए कहती है कि मैं तुम्हारे कानों में एक बात बताती हूँ तुम अपने दाऊ को मत बताना मै तुम्हारे शादी चाँद से भी सुंदर दुल्हन से करा दूँगी। यह सुनकर बलराम कहते हैं कि मैं अभी तुंरत ही विवाह करने जाऊँगा। सूरदास कहते हैं कि श्रीकृष्ण के विवाह में उनके सभी साथी बाराती बनकर मंगल गीत गाएँगे। कवि ने उपरोक्त पंक्तियों में श्रीकृष्ण के बाल-रूप के वर्णन के साथ-साथ बालक की मानसिक स्थीति का भी वर्णन किया है।

प्रश्नः- गृह कार्य

पाठ से संबंधित अभ्यास पुस्तिका के प्रश्नों को उत्तर पुस्तिका में लिखें।

WRITING SKILL

1. अनेकार्थी शब्द पृष्ठ संख्या **266** से **268** पढ़ कर प्रश्न संख्या **2** के खाली स्थान भरें तथा उसे उत्तर पुस्तिका में लिखें।

2. पर्यायवाची शब्द पृष्ठ संख्या- **253** से **254** सीखें तथा अभ्यास करें।

3. संस्कृत के वे शब्द जिसे तत्सम कहा जाता है उन शब्दों के परिवर्तित रूप जो हिन्दी में प्रयोग किये जाते हैं उन्हें तद्भव कहा जाता है। पृष्ठ संख्या **257-258** पढ़ कर सीखें तथा उसे उत्तर पुस्तिका में लिखें।

****